

मेवात क्षेत्र में विद्यालय त्यागी छात्र-छात्राओं की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्याओं का अध्ययन

Naveen, Research Scholar, Department of Education, North East Christian University

Dr. Sarika Goel, Professor, Department of Education, North East Christian University

सार

प्रस्तुत शोध-पत्र मेवात क्षेत्र के विद्यालय त्यागी छात्र-छात्राओं की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्याओं के अध्ययन पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य उन कारणों की पहचान करना है जो विद्यार्थियों को विद्यालय से दूर होने अथवा विद्यालय त्यागने के लिए प्रेरित करते हैं। मेवात क्षेत्र सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र है, जहाँ गरीबी, पारिवारिक अशिक्षा, बाल श्रम, लैंगिक असमानता तथा शैक्षिक संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ विद्यार्थियों की शिक्षा को प्रभावित करती हैं। अध्ययन में 450 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया तथा प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन विधियों के माध्यम से तथ्य संकलित किए गए। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक तनाव, आर्थिक कठिनाइयाँ, विद्यालयी भय तथा शिक्षकों का कठोर व्यवहार विद्यालय त्याग के प्रमुख कारण हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण एवं अभिभावकीय सहयोग विद्यार्थियों को शिक्षा से पुनः जोड़ने में सहायक हो सकते हैं।

प्रमुख शब्द

विद्यालय त्याग, मनोदशा, मेवात, सामाजिक समस्याएँ, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ, छात्र व्यवहार

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार मानी जाती है। यह केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक विकास का प्रमुख साधन भी है। विद्यालय वह संस्था है जहाँ बालक के व्यक्तित्व का निर्माण होता है तथा उसमें अनुशासन, सामाजिकता, आत्मविश्वास एवं उत्तरदायित्व जैसी विशेषताओं का विकास होता है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके शिक्षित नागरिकों पर निर्भर करती है, इसलिए प्रत्येक बच्चे को शिक्षा से जोड़कर रखना समाज एवं राज्य दोनों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। किंतु वर्तमान समय में विद्यालय त्याग एवं विद्यालय से अनुपस्थिति की समस्या शिक्षा व्यवस्था के समक्ष एक गंभीर चुनौती बनती जा रही है।

विशेष रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में यह समस्या अधिक जटिल रूप धारण कर लेती है। मेवात क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़ा क्षेत्र माना जाता है। यहाँ गरीबी, बेरोज़गारी, अशिक्षा, बाल श्रम, सामाजिक रूढ़ियाँ तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी जैसी समस्याएँ व्यापक रूप से विद्यमान हैं। इन

परिस्थितियों का प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ता है। अनेक विद्यार्थी पारिवारिक दायित्वों, आर्थिक कठिनाइयों तथा सामाजिक दबावों के कारण विद्यालय से दूरी बनाने लगते हैं। परिणामस्वरूप विद्यालय त्याग की समस्या उत्पन्न होती है, जो न केवल विद्यार्थियों के भविष्य को प्रभावित करती है, बल्कि समाज के विकास में भी बाधा उत्पन्न करती है।

विद्यालय त्याग करने वाले छात्र-छात्राओं की मनोदशा सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न होती है। ऐसे विद्यार्थियों में हीन भावना, भय, तनाव, असुरक्षा, निराशा तथा आत्मविश्वास की कमी जैसी मनोवैज्ञानिक समस्याएँ विकसित हो जाती हैं। कई बार विद्यालयी वातावरण, शिक्षकों का कठोर व्यवहार, साथियों द्वारा उपहास तथा अध्ययन में कठिनाई भी विद्यार्थियों को विद्यालय से दूर कर देती है। विद्यालय त्याग की स्थिति विद्यार्थियों के मानसिक संतुलन एवं सामाजिक व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। इससे उनमें अनुशासनहीनता, असामाजिक प्रवृत्तियाँ तथा भविष्य के प्रति अनिश्चितता की भावना विकसित होने लगती है।

मेवात क्षेत्र में विद्यालय त्याग की समस्या विशेष चिंता का विषय है क्योंकि यहाँ शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत निम्न है तथा अनेक परिवार आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े हुए हैं। बालिकाओं की शिक्षा के प्रति उदासीनता, बाल विवाह, घरेलू कार्यों का बोझ तथा लैंगिक असमानता जैसी समस्याएँ भी छात्राओं की शिक्षा को प्रभावित करती हैं। वहीं छात्र आर्थिक कारणों से मजदूरी अथवा अन्य कार्यों में लग जाते हैं, जिसके कारण उनकी विद्यालयी शिक्षा बाधित हो जाती है। इस प्रकार विद्यालय त्याग की समस्या केवल शैक्षिक समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्या भी है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मेवात क्षेत्र के विद्यालय त्यागी छात्र-छात्राओं की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि किन सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं विद्यालयी कारणों के कारण विद्यार्थी विद्यालय त्याग करते हैं तथा इसका उनकी मनोदशा एवं व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन विद्यार्थियों की वास्तविक समस्याओं को समझने तथा शिक्षा से पुनः जोड़ने की दिशा में उपयोगी सुझाव प्रदान करने का प्रयास करता है।

यह शोध समाज, शिक्षकों, अभिभावकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इसके माध्यम से विद्यालय त्याग की समस्या के वास्तविक कारणों को समझने में सहायता मिलेगी। साथ ही यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में जागरूकता बढ़ाने, विद्यालयी वातावरण को अधिक संवेदनशील बनाने तथा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को महत्व देने की आवश्यकता पर बल देता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध सामाजिक एवं शैक्षिक सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

साहित्य समीक्षा

फिन (1989) – “विद्यालय से अलगाव एवं छात्र सहभागिता का अध्ययन”

फिन द्वारा किए गए इस अध्ययन में विद्यालय से विद्यार्थियों के अलगाव तथा उनकी सहभागिता के मध्य संबंध का विश्लेषण किया गया। शोध में यह पाया गया कि जिन विद्यार्थियों की विद्यालयी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी कम होती है, उनमें विद्यालय से दूरी बनाने तथा विद्यालय त्याग की संभावना अधिक होती है। अध्ययन के अनुसार

विद्यालय केवल शिक्षा प्राप्त करने का स्थान नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का भी केंद्र होता है। यदि विद्यार्थियों को विद्यालय में प्रोत्साहन, सहयोग तथा सकारात्मक वातावरण प्राप्त नहीं होता, तो उनमें हीन भावना एवं असुरक्षा विकसित होने लगती है। फिन ने यह भी स्पष्ट किया कि शिक्षकों का व्यवहार, सहपाठियों के साथ संबंध तथा विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति को प्रभावित करता है। शोध में विद्यालयी सहभागिता को बढ़ाने के लिए प्रेरणात्मक शिक्षण, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों एवं परामर्श सेवाओं की आवश्यकता पर बल दिया गया।

शर्मा एवं वर्मा (1995) – “ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय त्याग के सामाजिक कारण”

शर्मा एवं वर्मा ने अपने अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का विस्तृत विश्लेषण किया। शोध में यह पाया गया कि आर्थिक अभाव, अभिभावकों की अशिक्षा, बाल श्रम तथा सामाजिक पिछड़ापन विद्यालय त्याग के प्रमुख कारण हैं। अध्ययन के अनुसार ग्रामीण परिवारों में बच्चों को शिक्षा की अपेक्षा घरेलू कार्य एवं मजदूरी में अधिक लगाया जाता है, जिससे उनकी शिक्षा प्रभावित होती है। शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि विद्यालयों में पर्याप्त संसाधनों की कमी, शिक्षकों की अनुपस्थिति तथा विद्यालय की दूरी विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति को प्रभावित करती है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि यदि ग्रामीण समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए तथा आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को सहायता प्रदान की जाए, तो विद्यालय त्याग की समस्या को कम किया जा सकता है।

सिंह (2002) – “किशोर विद्यार्थियों की मनोदशा एवं शैक्षिक व्यवहार”

सिंह ने किशोर विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति एवं उनके शैक्षिक व्यवहार का अध्ययन किया। इस शोध में यह पाया गया कि किशोरावस्था के दौरान विद्यार्थियों में भावनात्मक अस्थिरता, तनाव, भय तथा आत्मविश्वास की कमी अधिक पाई जाती है। अध्ययन के अनुसार जिन विद्यार्थियों को परिवार एवं विद्यालय से पर्याप्त सहयोग नहीं मिलता, वे मानसिक रूप से असुरक्षित महसूस करते हैं और धीरे-धीरे शिक्षा से विमुख होने लगते हैं। शोध में यह भी स्पष्ट किया गया कि परीक्षा का दबाव, शिक्षकों का कठोर व्यवहार तथा साथियों द्वारा उपहास विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को प्रभावित करता है। सिंह ने सुझाव दिया कि विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए, जिससे विद्यार्थियों की मानसिक समस्याओं का समाधान किया जा सके।

चौधरी (2008) – “विद्यालयी वातावरण एवं छात्र अनुपस्थिति”

चौधरी के अध्ययन में विद्यालयी वातावरण एवं छात्र अनुपस्थिति के संबंध का विश्लेषण किया गया। शोध के अनुसार विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं शैक्षिक रुचि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। अध्ययन में पाया गया कि दंडात्मक वातावरण, शिक्षकों का कठोर व्यवहार तथा विद्यालय में असुरक्षा की भावना विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति भय उत्पन्न करती है। कई विद्यार्थी अपमान एवं दंड के डर से विद्यालय से अनुपस्थित रहने लगते हैं। शोध में यह भी पाया गया कि जिन विद्यालयों में सहानुभूतिपूर्ण शिक्षक, खेल-कूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ अधिक होती हैं, वहाँ विद्यार्थियों की उपस्थिति बेहतर पाई जाती है। अध्ययन ने विद्यालयों में सकारात्मक एवं छात्र-केंद्रित वातावरण निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया।

खान (2012) – “अल्पसंख्यक समुदायों में शिक्षा संबंधी समस्याएँ”

खान ने अपने अध्ययन में अल्पसंख्यक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों की शैक्षिक समस्याओं का विश्लेषण किया। अध्ययन में यह पाया गया कि गरीबी, सामाजिक रूढ़ियाँ, लैंगिक भेदभाव तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी विद्यार्थियों की शिक्षा को प्रभावित करती हैं। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा में सामाजिक प्रतिबंध एवं घरेलू दायित्व बड़ी बाधा के रूप में सामने आए। शोध में यह भी स्पष्ट किया गया कि कई परिवारों में लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि लड़कियों की शिक्षा की उपेक्षा की जाती है। खान ने सुझाव दिया कि शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए तथा आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को शैक्षिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

रेड्डी (2021) – “किशोरों में विद्यालय त्याग व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन”

रेड्डी द्वारा किए गए अध्ययन में विद्यालय त्याग करने वाले किशोर विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का गहन विश्लेषण किया गया। शोध में यह पाया गया कि विद्यालय त्याग करने वाले विद्यार्थियों में तनाव, अवसाद, आत्महीनता एवं सामाजिक असुरक्षा की भावना अधिक पाई जाती है। अध्ययन के अनुसार पारिवारिक तनाव, विद्यालयी दबाव तथा भविष्य के प्रति अनिश्चितता विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। शोधकर्ता ने यह भी बताया कि जिन विद्यार्थियों को परिवार एवं शिक्षकों का भावनात्मक सहयोग प्राप्त होता है, उनमें विद्यालय त्याग की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम होती है। अध्ययन ने विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श केंद्र स्थापित करने एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर बल दिया।

कुमार एवं यादव (2022) – “ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक चुनौतियाँ”

कुमार एवं यादव ने ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चुनौतियों का अध्ययन किया। शोध में यह पाया गया कि विद्यालयों में संसाधनों की कमी, परिवहन सुविधाओं का अभाव तथा आर्थिक कठिनाइयाँ विद्यार्थियों की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती हैं। अध्ययन के अनुसार कई विद्यार्थी विद्यालय तक पहुँचने में कठिनाई का सामना करते हैं, जिसके कारण उनकी उपस्थिति प्रभावित होती है। शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि डिजिटल शिक्षा एवं तकनीकी संसाधनों की कमी ग्रामीण विद्यार्थियों को शहरी विद्यार्थियों की तुलना में पीछे कर देती है। अध्ययन में सुझाव दिया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयी सुविधाओं का विस्तार किया जाए तथा विद्यार्थियों को आर्थिक एवं तकनीकी सहायता प्रदान की जाए।

उपरोक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय त्याग एवं विद्यालय से भागने की समस्या सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों से प्रभावित होती है। यद्यपि विभिन्न विद्वानों ने इस विषय के अनेक पहलुओं का अध्ययन किया है, तथापि मेवात क्षेत्र के विद्यालय त्यागी छात्र-छात्राओं की मनोदशा एवं सामाजिक समस्याओं पर विशेष रूप से सीमित शोध उपलब्ध हैं। यही शोध-अंतराल प्रस्तुत अध्ययन को महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक बनाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य मेवात क्षेत्र के विद्यालय त्यागी एवं अनियमित उपस्थिति वाले छात्र-छात्राओं की मनोदशा, सामाजिक परिस्थितियों तथा शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना है। अध्ययन मेवात क्षेत्र के विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में किया गया, जहाँ विद्यालय त्याग एवं विद्यालय से अनुपस्थिति की समस्या अधिक पाई जाती है।

अध्ययन की जनसंख्या में मेवात क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया। अध्ययन हेतु कुल 450 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया, जिनमें विद्यालय त्यागी, अनियमित उपस्थिति वाले तथा विद्यालय से दूरी बनाने की प्रवृत्ति रखने वाले विद्यार्थी सम्मिलित थे। नमूना चयन के लिए यादृच्छिक नमूना चयन विधि तथा उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि का प्रयोग किया गया, ताकि अध्ययन के लिए उपयुक्त एवं प्रतिनिधित्वपूर्ण नमूना प्राप्त किया जा सके।

तथ्य संकलन के लिए संरचित प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन विधि का उपयोग किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई, जबकि साक्षात्कार द्वारा विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के विचारों को समझने का प्रयास किया गया। अवलोकन विधि के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं विद्यालयी वातावरण का अध्ययन किया गया।

संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि, औसत, मानक विचलन तथा कार्ई-स्क्वेयर परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों को तालिकाओं एवं व्याख्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे विद्यालय त्याग के प्रमुख कारणों एवं विद्यार्थियों की मनोदशा का स्पष्ट विश्लेषण किया जा सके। अध्ययन की वैधता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करने हेतु प्रश्नावली का पूर्व परीक्षण भी किया गया।

परिणाम

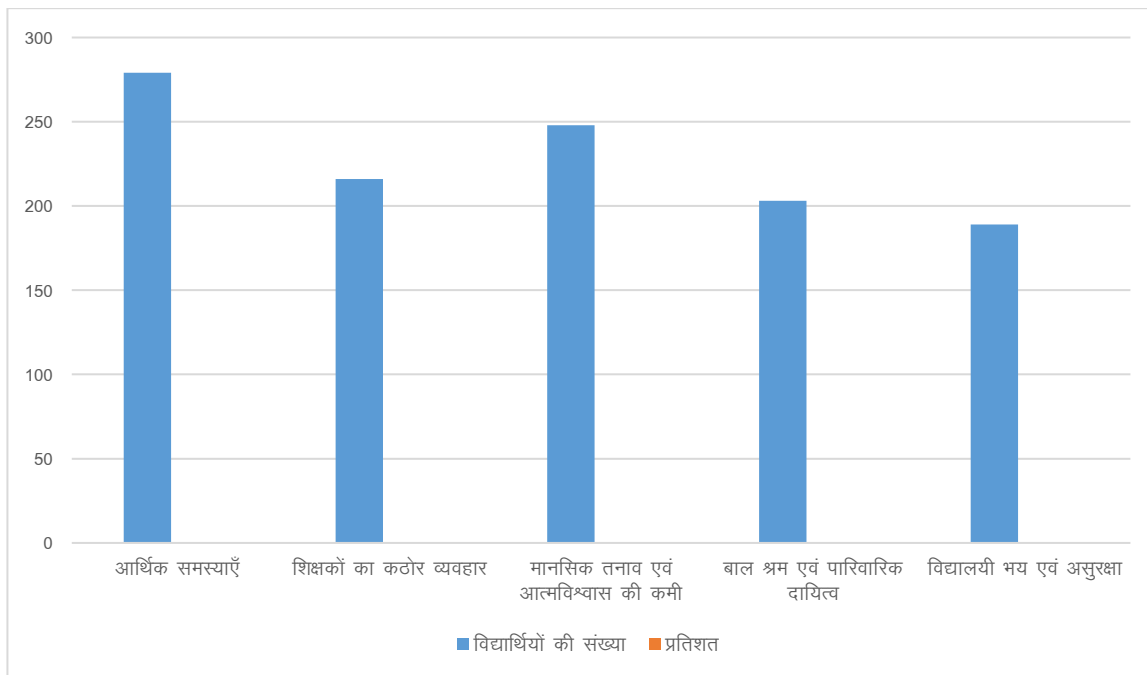
अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि विद्यालय त्याग की समस्या अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक कारणों से प्रभावित होती है। अधिकांश विद्यार्थियों ने आर्थिक कठिनाइयों, पारिवारिक दबाव तथा विद्यालयी वातावरण को विद्यालय त्याग का प्रमुख कारण माना। अध्ययन में यह भी पाया गया कि मानसिक तनाव, आत्मविश्वास की कमी तथा शिक्षकों का कठोर व्यवहार विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति रुचि को प्रभावित करता है। बाल श्रम एवं घरेलू जिम्मेदारियों के कारण भी अनेक विद्यार्थी नियमित रूप से विद्यालय नहीं जा सके। जिन विद्यार्थियों को अभिभावकीय सहयोग एवं सकारात्मक विद्यालयी वातावरण प्राप्त हुआ, उनमें विद्यालय त्याग की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम पाई गई।

अध्ययन के दौरान यह भी देखा गया कि विद्यालय त्याग करने वाले विद्यार्थियों में सामाजिक असुरक्षा एवं भविष्य के प्रति निराशा की भावना अधिक पाई गई। कई विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया कि आर्थिक अभाव एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण वे अपनी पढ़ाई पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे सके। कुछ विद्यार्थियों ने विद्यालयी वातावरण को तनावपूर्ण एवं भयपूर्ण बताया, जिसके कारण उनकी विद्यालय के प्रति रुचि कम होती गई। जिन विद्यार्थियों को शिक्षकों एवं अभिभावकों से प्रोत्साहन प्राप्त हुआ, उनमें शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक पाया गया।

तालिका 1

विद्यालय त्याग के प्रमुख कारण

क्रम संख्या	कारण	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	आर्थिक समस्याएँ	279	62%
2	शिक्षकों का कठोर व्यवहार	216	48%
3	मानसिक तनाव एवं आत्मविश्वास की कमी	248	55%
4	बाल श्रम एवं पारिवारिक दायित्व	203	45%
5	विद्यालयी भय एवं असुरक्षा	189	42%

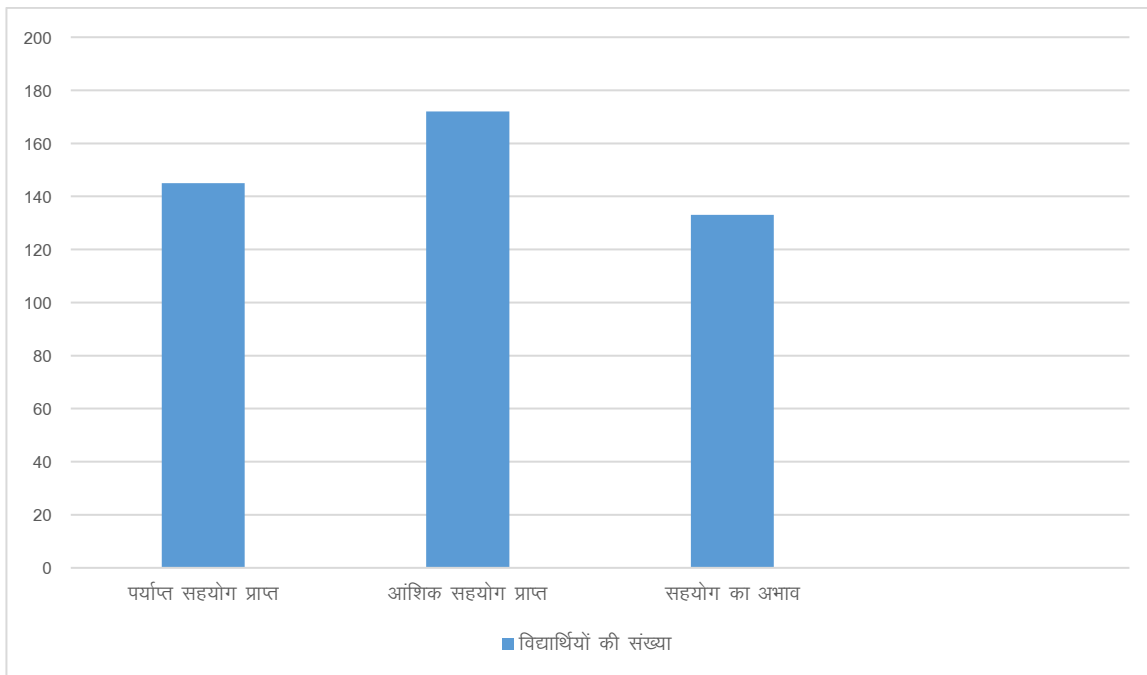


उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि आर्थिक समस्याएँ विद्यालय त्याग का सबसे प्रमुख कारण हैं। लगभग 62 प्रतिशत विद्यार्थियों ने आर्थिक कठिनाइयों को विद्यालय छोड़ने का मुख्य कारण माना। 55 प्रतिशत विद्यार्थियों में मानसिक तनाव एवं आत्मविश्वास की कमी पाई गई, जबकि 48 प्रतिशत विद्यार्थियों ने शिक्षकों के कठोर व्यवहार को विद्यालय से दूरी बनाने का कारण बताया। बाल श्रम एवं पारिवारिक दायित्वों का प्रभाव 45 प्रतिशत विद्यार्थियों पर पाया गया। विद्यालयी भय एवं असुरक्षा की भावना भी विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति को प्रभावित करती है।

तालिका 2

पारिवारिक सहयोग एवं विद्यालय त्याग प्रवृत्ति

क्रम संख्या	पारिवारिक सहयोग की स्थिति	विद्यार्थियों की संख्या	विद्यालय त्याग प्रवृत्ति
1	पर्याप्त सहयोग प्राप्त	145	कम
2	आंशिक सहयोग प्राप्त	172	मध्यम
3	सहयोग का अभाव	133	अधिक

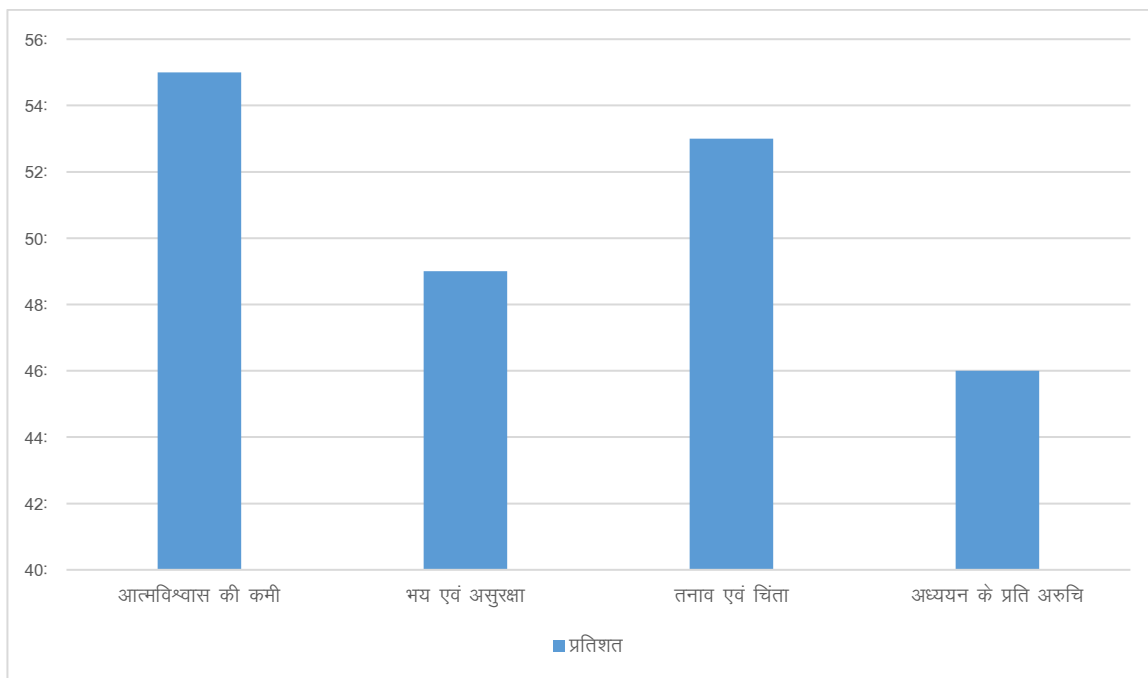


तालिका से ज्ञात होता है कि जिन विद्यार्थियों को परिवार से पर्याप्त सहयोग प्राप्त था, उनमें विद्यालय त्याग की प्रवृत्ति कम पाई गई। इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों को पारिवारिक सहयोग नहीं मिला, उनमें विद्यालय त्याग की संभावना अधिक देखी गई। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शिक्षा में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। पारिवारिक सहयोग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं मानसिक स्थिरता को बढ़ाने में सहायक होता है।

तालिका 3

विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक स्थिति

क्रम संख्या	मनोवैज्ञानिक समस्या	प्रतिशत
1	आत्मविश्वास की कमी	55%
2	भय एवं असुरक्षा	49%
3	तनाव एवं चिंता	53%
4	अध्ययन के प्रति अरुचि	46%

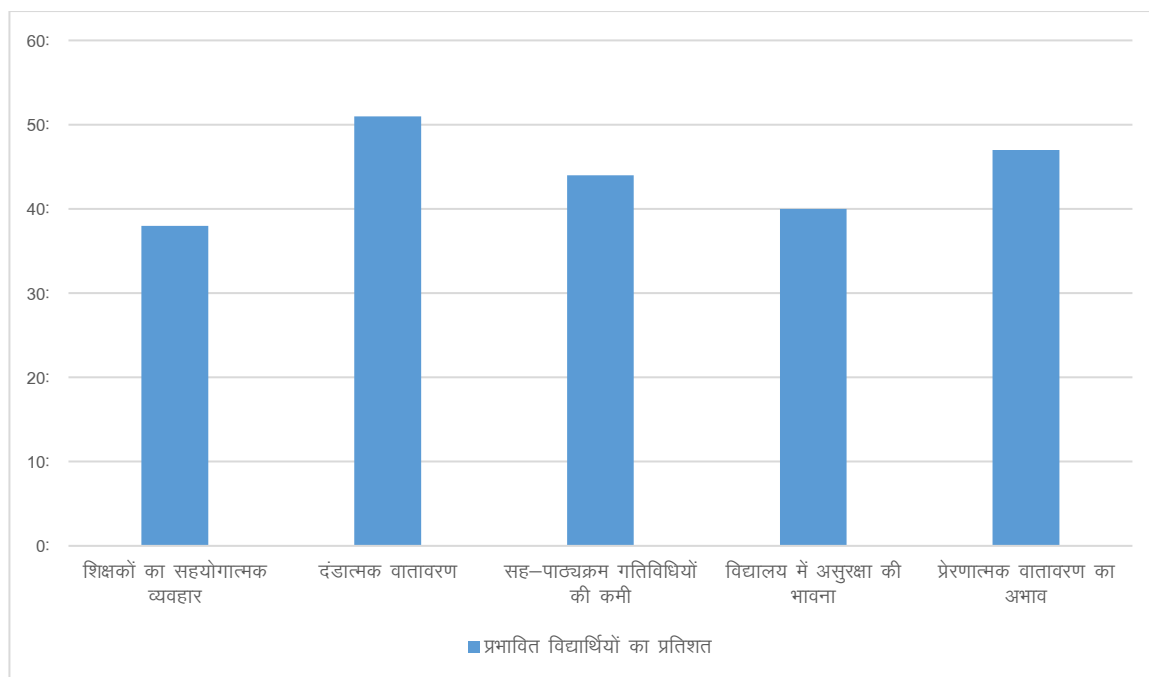


उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विद्यालय त्यागी विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी, भय, तनाव एवं अध्ययन के प्रति अरुचि जैसी समस्याएँ व्यापक रूप से पाई जाती हैं। ये समस्याएँ विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सामाजिक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। मानसिक तनाव के कारण विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं शैक्षिक प्रदर्शन में भी कमी देखी गई।

तालिका 4

विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों पर प्रभाव

क्रम संख्या	विद्यालयी वातावरण के कारक	प्रभावित विद्यार्थियों का प्रतिशत
1	शिक्षकों का सहयोगात्मक व्यवहार	38%
2	दंडात्मक वातावरण	51%
3	सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की कमी	44%
4	विद्यालय में असुरक्षा की भावना	40%
5	प्रेरणात्मक वातावरण का अभाव	47%



उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं शैक्षिक व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। 51 प्रतिशत विद्यार्थियों ने दंडात्मक वातावरण को विद्यालय से दूरी बनाने का प्रमुख कारण माना। 47 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रेरणात्मक वातावरण के अभाव को अपनी शिक्षा में बाधक बताया। वहीं जिन विद्यालयों में शिक्षकों का सहयोगात्मक व्यवहार पाया गया, वहाँ विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति रुचि अपेक्षाकृत अधिक देखी गई। इससे स्पष्ट होता है कि सकारात्मक एवं छात्र-केंद्रित विद्यालयी वातावरण विद्यालय त्याग की समस्या को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

विमर्श

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मेवात क्षेत्र में विद्यालय त्याग की समस्या अत्यंत जटिल एवं बहुआयामी है। यह केवल आर्थिक अभाव तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, पारिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों से भी गहराई से जुड़ी हुई है। अध्ययन में यह पाया गया कि आर्थिक कठिनाइयाँ विद्यार्थियों के विद्यालय त्याग का प्रमुख कारण हैं, किंतु इसके साथ-साथ पारिवारिक तनाव, विद्यालयी भय, शिक्षकों का कठोर व्यवहार तथा सामाजिक असुरक्षा भी विद्यार्थियों की मनोदशा को प्रभावित करती है। जिन विद्यार्थियों को परिवार एवं विद्यालय से भावनात्मक सहयोग नहीं मिला, उनमें विद्यालय के प्रति अरुचि एवं दूरी की भावना अधिक विकसित हुई।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि विद्यालय त्याग करने वाले विद्यार्थियों में मानसिक तनाव, भय, आत्मविश्वास की कमी तथा हीन भावना जैसी समस्याएँ अधिक पाई जाती हैं। ऐसे विद्यार्थी स्वयं को अन्य विद्यार्थियों की तुलना में कमजोर एवं असुरक्षित महसूस करते हैं। कई विद्यार्थियों ने यह अनुभव किया कि विद्यालय में उन्हें पर्याप्त प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त नहीं होता, जिसके कारण वे विद्यालय से दूर होने लगते हैं। शिक्षकों का दंडात्मक व्यवहार तथा सहपाठियों द्वारा उपहास भी विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

शोध के परिणाम यह संकेत करते हैं कि विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं शैक्षिक व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। जिन विद्यालयों में सहानुभूतिपूर्ण शिक्षक, प्रेरणात्मक वातावरण तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ उपलब्ध थीं, वहाँ विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति रुचि अधिक पाई गई। इसके विपरीत कठोर एवं अनुशासनात्मक वातावरण विद्यार्थियों में भय एवं तनाव उत्पन्न करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयों को केवल शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थान के रूप में नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सामाजिक विकास के केंद्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

अध्ययन में पारिवारिक सहयोग की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण पाई गई। जिन विद्यार्थियों को परिवार से प्रोत्साहन एवं भावनात्मक समर्थन प्राप्त था, उनमें विद्यालय त्याग की प्रवृत्ति कम दिखाई दी। इसके विपरीत जिन परिवारों में आर्थिक संकट, पारिवारिक कलह अथवा शिक्षा के प्रति उदासीनता थी, वहाँ विद्यार्थियों की विद्यालयी उपस्थिति प्रभावित हुई। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शिक्षा में परिवार एवं विद्यालय दोनों की संयुक्त भूमिका आवश्यक है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि यदि विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाएँ, छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति तथा सकारात्मक वातावरण उपलब्ध कराया जाए, तो विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति रुचि को बढ़ाया जा सकता है। साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, निःशुल्क अध्ययन सामग्री एवं अन्य सहायता उपलब्ध कराना भी आवश्यक है। इस प्रकार विद्यालय त्याग की समस्या के समाधान के लिए सामाजिक, शैक्षिक एवं प्रशासनिक स्तर पर समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मेवात क्षेत्र में विद्यालय त्याग की समस्या सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक कारणों का संयुक्त परिणाम है। विद्यार्थियों की शिक्षा केवल विद्यालयी व्यवस्था पर निर्भर नहीं करती, बल्कि परिवार, समाज एवं आर्थिक परिस्थितियाँ भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। गरीबी, पारिवारिक अशिक्षा, बाल श्रम, सामाजिक पिछड़ापन तथा विद्यालयी भय जैसी समस्याएँ विद्यार्थियों को शिक्षा से दूर करने में प्रमुख भूमिका निभाती हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि विद्यालय त्याग करने वाले विद्यार्थियों में मानसिक तनाव, भय, आत्मविश्वास की कमी तथा असुरक्षा की भावना अधिक पाई जाती है। ये समस्याएँ उनके शैक्षिक प्रदर्शन, सामाजिक व्यवहार तथा व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करती हैं। यदि समय रहते इन समस्याओं का समाधान नहीं किया जाए, तो विद्यार्थी शिक्षा से पूर्णतः विमुख हो सकते हैं, जिसका प्रभाव उनके भविष्य एवं समाज दोनों पर पड़ता है।

अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यालय त्याग की समस्या के समाधान हेतु परिवार, विद्यालय, समाज एवं सरकार के संयुक्त प्रयास आवश्यक हैं। विद्यालयों में छात्र-केंद्रित एवं प्रेरणात्मक वातावरण विकसित किया जाना चाहिए, जहाँ विद्यार्थियों को भयमुक्त एवं सहयोगात्मक वातावरण प्राप्त हो सके। शिक्षकों को विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार अपनाना चाहिए तथा विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क पुस्तकें, वर्दी एवं अन्य शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि आर्थिक अभाव उनकी शिक्षा में बाधा न बने। अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सामाजिक एवं शैक्षिक अभियान चलाए जाने चाहिए। विशेष रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

अतः कहा जा सकता है कि विद्यालय त्याग की समस्या केवल शिक्षा विभाग की समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक विकास एवं राष्ट्रीय प्रगति से जुड़ा हुआ विषय है। विद्यार्थियों को शिक्षा से जोड़कर रखना समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन इस दिशा में जागरूकता उत्पन्न करने तथा विद्यार्थियों की वास्तविक समस्याओं को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

संदर्भ सूची

- शर्मा, आर. (2018). ग्रामीण शिक्षा एवं सामाजिक समस्याएँ। नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
- सिंह, एम. (2019). विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक असमानता। जयपुर: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- कुमार, पी. (2020). शिक्षा एवं बाल मनोविज्ञान। आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
- वर्मा, एस. (2017). किशोर व्यवहार एवं शिक्षा। नई दिल्ली: एपीएच प्रकाशन।
- चौधरी, एल. (2021). ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याएँ। जयपुर: साहित्य भवन।
- खान, ए. (2016). अल्पसंख्यक समुदाय एवं शिक्षा की चुनौतियाँ। अलीगढ़: शैक्षिक प्रकाशन।
- यादव, आर. (2022). विद्यालय त्याग एवं सामाजिक कारक। लखनऊ: भारतीय शिक्षा संस्थान।
- मिश्रा, डी. (2015). किशोर मनोदशा और विद्यालयी व्यवहार। वाराणसी: ज्ञानदीप प्रकाशन।
- चौहान, पी. (2019). विद्यालयी वातावरण एवं छात्र विकास। जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- रेड्डी, आर. (2021). किशोरों में विद्यालय त्याग व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन। हैदराबाद: शिक्षा शोध प्रकाशन।